रात्रि क्लास 31/5/68 ओमशान्ति
बाप और दादा। दादा तो देखने में आते हैं। जैसे आत्मा देखने में नहीं आती है वैसे बाबा भी देखने में नहीं आते हैं। आत्मा समझती है बाबा हमको याद की यात्रा सिखला रहे हैं। सृष्टि का चक्र भी समझा रहे हैं। आत्मा को ज्ञान हुआ हम बात–चीत करते हैं। हम नहीं होता तो शरीर नहीं बोलता। हम आत्मा ही शरीर द्वारा पार्ट बजाती हैं। पार्ट मिला हुआ है अनादि। इस समय बच्चों को अपन को आत्मा समझ आत्मा निश्चय करना ही पड़ेगा। बाप को याद करना ही पड़ेगा। यह है सदगुरू। उनकी आज्ञा सिर माथे पर; क्योंकि उनकी मत से ही सद्गति होती है। वह गुरू इन आँखों से देखने में आते हैं। सदगुरू देखने में नहीं आते इन आँखों से। वह शरीर द्वारा शरीरों को ही सुनाते हैं। वह ऐसे समझते नहीं हैं हम आत्माओं को सुनाते हैं। यह बातें गुह्य महीन हैं। यह बातें तुम सिर्फ़ संगमयुग पर ही जानते हो। ऊँच ते ऊँच बाप, पढ़ा(ई) भी ऊँच ते ऊँच। तो ज़रूर भगवान भक्ति बनना पड़े। बच्चे समझ कर आते हैं हम आत्माएँ हैं। हम आत्मा बाबा पास जाते हैं। हम शिवबाबा पास जाते हैं। लौकिक बाप पास नहीं, शिवबाबा पास जाते हैं

31/5/68 3

तो खुशी का नशा चढ़ेगा। खुशी से ही छुट्टियाँ आदि ले आते हैं। समझते हैं हमारी आत्मा को घड़ी–2 दुःख में जाने से बचाते हैं। हमारी आत्मा की रक्षा करते हैं। आत्मा में ही मन–बुद्धि है। यह सभी है स्थूल कर्मइन्द्रियाँ। मन–बुद्धि कितनी सूक्ष्म है। बुद्धि में समझ है वह निराकार बाप है। यह साकार बाबा। निराकार बाबा ही ऊँच ते ऊँच है। वही–2 बच्चे कह शिक्षा देते हैं। बच्चों, तुम काम चिक्षा पर बैठ काले हो गये हो। अभी ज्ञान चिक्षा पर बैठो तो गोरा बन जावेंगे। अभी प्रदर्शनी का प्रबंध हो रहा है। पहला ही बारी प्रदर्शनी होती है आबू में। मनुष्य को देवता बनाना बड़ा सुखी बनाना है। देवताएँ सुखी थे। वह थी देवी–देवताओं की सृष्टि। मनुष्य दुःखी हैं। यह है मनुष्यों की दुनियां। हम सो देवता थे फिर सीढ़ी उतरे हैं। आगे यह बातें बुद्धि में नहीं थीं अर्थात् बेसमझ (थे)। मीठे–2 बाबा ने हमको कितना समझदार बनाया है। आगे कुछ नहीं समझते थे।

बिचारों को बहुत मालूम पड़ जाता है विनाश होता है। विनाश से पहले स्थापना होती है। लिखत में भी पहले–2 स्थापना लिखना है। पहले विनाश फिर स्थापना कैसे हो सकती? बच्चियाँ समझ कर आती हैं हम जाते हैं बाबा के पास। भिन्न–2 हैं ना। बाबा पास क्या करने जाते हैं? क्यों जाते हैं? बाबा से वर्सा लेने। कैसे लेते हो? बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। मैं पतित–पावन हूँ। यह बातें नये के बुद्धि में हो न सके। समझाना चाहिए ना यह बाबा है। भगवान को बाबा कहते हैं। भगवान पढ़ाते हैं तो हमको पूरा पढ़ना चाहिए ना। जैसे यह पढ़ने आये हैं, हम भी क्यों न पढ़ें। वह बाप, टीचर, गुरू भी है। मीठी–2 बातें सुन कर दिल होगी हम (भी) चलें तो बाप फिर दो बाप की बात सुनावेंगे। ऐसी बातें तो कब कहाँ से सुनी न हैं। दिन–प्रतिदिन तुम होशियार होते जाते हो। आने वालों की देख–रेख करनी है। दिल में आता है यह क्लास में बिठाने लायक है। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार, गुडनाइट। रूहानी मीठे–2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

प्वाइन्ट्स– साइंस घमण्डी कितने चीज़ें बनाते रहते हैं। यह कोई रखने लिए थोड़े ही बनाते हैं। समझते हैं आपस में लड़ेंगे तो यह चीज़ें काम में आवेंगी। जानते हैं आपस में ही लड़–झगड़ ख़त्म होनी है। आखिरीन में बॉम्ब्स भी देंगे। देने से डरेंगे भी। हम दें और हमारा ही दुश्मन बन हमको न उड़ा दे; इसलिए ऐसी–2 चीज़ें शायद किसको न देवें। रशिया, अमेरिका सबसे तीखे हैं। बाप कहते हैं सिवाय योगबल के कोई भी विश्व का मालिक बन न सके। कृष्ण सतयुग का पहला प्रिंस कैसे बना, कैसे राजधानी स्थापन हुई यह भी अभी तुम जानते हो। कितनी अच्छी समझ मिलती है। बाप के बनने बिगर सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान हो न सके। पवित्र दुनियां थी ना। ऐसा हैविन तुम स्थापन करते हो। वंदेमात्रम यह तुम्हारी महिमा है। भल ज्ञान तो प्रवृत्तिमार्ग का है; परन्तु महिमा माताओं की है। सेंटर्स पर भी माताएँ ही समझाती हैं। माताओं का नाम होता है; इसलिए

वंदेमात्रम कहा जाता है। स्वर्ग़ के गेट्स तुम खोलती हो। अभी है नर्क। इन आँखों से यहाँ तुम जो कुछ देखते हो यह सभी है माया का पॉम्प। तो मनुष्य मूँझते भी हैं। समझते हैं स्वर्ग़ तो यह है ना। विमान आदि वहाँ भी, यहाँ भी हैं। पैसे भी, बहुत महल आदि भी हैं। तुम्हारी बात भी सुनते नहीं; इसलिए बाप कहते हैं मैं ग़रीब निवाज़ हूँ। ग़रीब और साधारण बहुत हैं। पहले जो भट्ठी बनी उनकी तो कमाल थी। ज्ञान भी इतना नहीं था जो घर–बार आदि सब छोड़ भागे। इनमें कशिश थी। इनको देखने से ही सा० होता था। अभी तुम हो संगम पर। तुम समझते हो हम यह राजकुमार–राजकुमारी बनेंगे। पुरानी दुनियां भी विनाश को पानी है। बाकी थोड़ा समय है। फिर तो ज्ञान भी ले न सकेंगे। इतना समय लगता है याद की यात्रा में। अच्छा, ओम।

–:बाप और वर्सा याद है?:–